भजन

तेरी नजरें करम हों मेरे पिया,
झूठी दुनियां की दौलत नहीं चाहिए
तेरा दर है सलामत मैं सजदे करूं,
और किसी की इबादत नहीं चाहिए

1- सर उठाने की अब मुझमें ताकत नहीं,
तेरे चरणों में सर ये झुका ही रहे
मिल गए मालिके दो जहां अब हमें,
और कोई भी हसरत नहीं चाहिए
2- तेरे जलवों की हरदम मुझे दीद है,
दीद मिलती रहे तो मेरी ईद है
वाणी से ही मिला हमें नूर तेरा
और कोई भी जन्नत नहीं चाहिए
3- तेरी रहमत में है पिया इतना असर,
वो ही जाने मिली जिनको इश्के नजर
वो नजर हमको भी मिलती रहे,
और किसी की भी उलफत नहीं चाहिए